अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 | संख्या 60 | श्री विजय पुरम, सोमवार, 02 मार्च 2026 | web: dt.andamannicobar.gov.in | 2.00 रूपए

अण्डमान बेसिन में तेल की खोज भारत के आर्थिक परिवर्तन को गति दे रही है

भारत के अण्डमान बेसिन में तेल अन्वेषण के रणनीतिक महत्व को समझना

अण्डमान बेसिन में तेल अन्वेषण की पहल भारत के ऊर्जा परिदृश्य में एक क्रांतिकारी अवसर प्रस्तुत करती है, जहाँ गहरे पानी में हाइड्रोकार्बन की खोज तकनीकी प्रगति और भू-राजनीतिक रणनीति के साथ जुड़ती है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र के जटिल विवर्तनिक वातावरण में स्थित यह भौगोलिक संरचना इस बात का उदाहरण है कि कैसे अप्रमाणित भंडार वाले उभरते बेसिन राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा प्रतिमानों को नया आकार दे सकते हैं। इसके अलावा, बेसिन का विकास वैश्विक तेल कीमतों में अस्थिरता और व्यापार युद्ध के बदलते प्रभावों की पृष्ठभूमि में हो रहा है, जो निवेश निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

भूवैज्ञानिक आधार और संसाधन मूल्यांकन ढांचा

प्रमुख विवर्तनिक प्लेटों के प्रतिच्छेदन पर स्थित यह बेसिन अद्वितीय भूवैज्ञानिक परिस्थितियाँ बनाता है जो हाइड्रोकार्बन को प्रभावी ढंग से अवरुद्ध कर सकती हैं। ये संरचनात्मक विशेषताएँ दक्षिणपूर्व एशिया में पाए जाने वाले सफल पेट्रोलियम तंत्रों के समान हैं, जहाँ इसी प्रकार की भूवैज्ञानिक संरचनाओं से महत्वपूर्ण व्यावसायिक खोजें हुई हैं।

प्रमुख भूवैज्ञानिक लाभ:

- जटिल दोष प्रणालियाँ जो कई ट्रैप विन्यास उत्पन्न करती हैं
- सतही हस्तक्षेप कम होने वाले गहरे जल वातावरण
- पड़ोसी क्षेत्रों में सिद्ध पेट्रोलियम प्रणालियों से निकटता
- तलछटी अनुक्रम जो हाइड्रोकार्बन प्रवासन के अनुकूल मार्गों को दर्शाते हैं

वर्तमान मूल्यांकन पद्धतियों से पता चलता है कि इस बेसिन में पर्याप्त हाइड्रोकार्बन भंडार मौजूद है। हालांकि, सटीक मात्रा के अनुमानों की व्यापक भूकंपीय सर्वेक्षणों और खोजपूर्ण ड्रिलिंग कार्यक्रमों के माध्यम से सावधानीपूर्वक पुष्टि करना आवश्यक है। गुयाना के स्टैब्रोक ब्लॉक में पाए गए हाइड्रोकार्बन भंडारों से तुलना करने पर पता चलता है कि उद्योग जगत इस बेसिन की व्यावसायिक व्यवहार्यता को मान्यता दे चुका है।

हिंद-प्रशांत ऊर्जा गलियारों के भीतर रणनीतिक स्थान

अण्डमान बेसिन की भौगोलिक स्थिति भारत की व्यापक ऊर्जा सुरक्षा रणनीति के लिए कई लाभ प्रदान करती है। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाले प्रमुख समुद्री मार्गों पर स्थित यह क्षेत्र घरेलू और अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजारों तक रणनीतिक पहुंच प्रदान करता है।

भौगोलिक लाभों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- गहरे पानी के जहाज़रानी मार्गों तक सीधी पहुंच
- एशिया के प्रमुख ऊर्जा खपत केंद्रों से निकटता
- मध्य पूर्व से आयात की तुलना में परिवहन लागत कम
- ऊर्जा आपूर्ति विविधीकरण के बेहतर अवसर

यह स्थिति भारत के पारंपरिक ऊर्जा आयात स्रोतों पर निर्भरता कम करने और घरेलू उत्पादन क्षमता विकसित करने के उद्देश्य के अनुरूप है। इसके अलावा, इस बेसिन की भौगोलिक स्थिति अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में व्यापक अवसंरचना विकास पहलों को भी समर्थन देती है।

हालिया अन्वेषण विकास और वाणिज्यिक संकेतकों का विश्लेषण प्रारंभिक भूवैज्ञानिक आकलन से सक्रिय अन्वेषण तक की प्रगति अपतटीय बेसिन विकास में एक महत्वपूर्ण चरण का प्रतिनिधित्व करती है। अण्डमान बेसिन तेल अन्वेषण क्षेत्र में वर्तमान गतिविधियाँ व्यावसायिक व्यवहार्यता में बढ़ते विश्वास को दर्शाती हैं, हालांकि महत्वपूर्ण तकनीकी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।

तकनीकी प्रगति और अन्वेषण के महत्वपूर्ण पड़ाव

हालिया अन्वेषण गतिविधियों से पता चलता है कि उद्योग व्यवस्थित भूवैज्ञानिक और भूभौतिकीय अध्ययनों के माध्यम से बेसिन की हाइड्रोकार्बन क्षमता को समझने के लिए प्रतिबद्ध है। इन अध्ययनों में उन्नत भूकंपीय प्रौद्योगिकियों और गहरे पानी के वातावरण के लिए अनुकूलित परिष्कृत ड्रिलिंग तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है।

वर्तमान तकनीकी उपलब्धियां:

- कई बेसिन खंडों में व्यापक भूकंपीय मानचित्रण
- जटिल भूवैज्ञानिक स्थितियों के लिए अनुकूलित उन्नत ड्रिलिंग तकनीकें
- आधुनिक लॉगिंग और सैंपलिंग विधियों के माध्यम से बेहतर डेटा संग्रह
- क्षेत्रीय पेट्रोलियम प्रणाली विश्लेषण को समाहित करते हुए भूवैज्ञानिक मॉडलिंग

गहरे जलक्षेत्र में होने वाले तकनीकी जटिल कार्यों के लिए विशेष उपकरणों और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप, इन कार्यों के लिए अक्सर ऐसे अंतरराष्ट्रीय संचालकों के साथ साझेदारी आवश्यक हो जाती है जिनके पास सिद्ध गहरे जलक्षेत्र विकास क्षमताएं हों। ये सहयोग आवश्यक तकनीकी ज्ञान प्रदान करते हैं और साथ ही अपतटीय अन्वेषण से जुड़े महत्वपूर्ण वित्तीय जोखिमों को साझा करते हैं।

निवेश ढांचा और पूंजी आवश्यकताएं

समुद्री जलकार्बन विकास के लिए राजस्व प्राप्ति से पहले ही काफी प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता होती है। पूंजी की आवश्यकता अन्वेषण, विकास और उत्पादन चरणों तक फैली हुई है, जिनमें से प्रत्येक में अलग-अलग जोखिम और प्रतिफल की अपेक्षाएं होती हैं।

विकास का चरण	पूंजी आवश्यकताएँ	समय	प्रमुख जोखिम
अन्वेषण	उच्च प्रारंभिक व्यय	2–4 वर्ष	भूवैज्ञानिक अनिश्चितता
मूल्यांकन	मध्यम निवेश	1–3 वर्ष	संसाधन मात्रा निर्धारण
विकास	पर्याप्त प्रतिबद्धता	3–7 वर्ष	तकनीकी निष्पादन
उत्पादन	चल रहे परिचालन लागत	15–30 वर्ष	बाजार अस्थिरता

भारत सरकार की लाइसेंसिंग संरचना का उद्देश्य घरेलू क्षमता विकास सुनिश्चित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय निवेश को आकर्षित करना है। यह दृष्टिकोण विदेशी विशेषज्ञता की आवश्यकताओं और राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा उद्देश्यों के बीच संतुलन स्थापित करता है, विशेष रूप से वैश्विक अन्वेषण लाइसेंसिंग के प्रभाव के रुझानों को ध्यान में रखते हुए।

आर्थिक प्रभाव अनुमान और विकास परिदृश्य

अण्डमान बेसिन के विकास से होने वाले संभावित आर्थिक योगदान प्रत्यक्ष हाइड्रोकार्बन राजस्व तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें व्यापक बुनियादी ढांचा विकास और क्षेत्रीय आर्थिक परिवर्तन भी शामिल हैं। अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के उप राज्यपाल एडमिरल डी. के. जोशी के आर्थिक अनुमानों के अनुसार, इस क्षेत्र में तेल की खोज भारत की दीर्घकालिक आर्थिक वृद्धि को मजबूत कर सकती है और देश के 4 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था से 20 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में परिवर्तित होने के लक्ष्य को साकार करने में सहायक हो सकती है।

वृहद आर्थिक विकास के मार्ग और जीडीपी में योगदान

बड़े पैमाने पर हाइड्रोकार्बन विकास प्रत्यक्ष रोज़गार, आपूर्ति श्रृंखला विकास और अवसंरचना निवेश के माध्यम से कई आर्थिक गुणक प्रभाव पैदा करता है। अण्डमान बेसिन में तेल की खोज कई तंत्रों के माध्यम से भारत के व्यापक आर्थिक विस्तार में योगदान दे सकती है:

प्रत्यक्ष आर्थिक योगदान:

- हाइड्रोकार्बन उत्पादन से होने वाली आय और निर्यात क्षमता
- तकनीकी और परिचालन भूमिकाओं में रोज़गार सृजन
- प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता विकास
- आपूर्ति श्रृंखला का स्थानीयकरण और औद्योगिक विकास

अप्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव:

- अवसंरचना विकास से क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा मिल रहा है।
- पर्यटन और व्यापार को बढ़ावा देने वाली बेहतर कनेक्टिविटी
- व्यापक हिंद-प्रशांत आर्थिक एकीकरण के लिए रणनीतिक स्थिति
- ऊर्जा सुरक्षा में सुधार से आयात पर निर्भरता कम होती है

इस परिवर्तन की क्षमता ऊर्जा उत्पादन से परे व्यापक क्षेत्रीय विकास पहलों तक फैली हुई है। ये पहल अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की आर्थिक रूपरेखा को मौलिक रूप से बदल सकती हैं।

अवसंरचना विकास और क्षेत्रीय परिवर्तन

एडमिरल डी. के. जोशी ने बताया कि ग्रेट निकोबार द्वीपसमूह के लिए 82,450 करोड़ रुपये की परियोजनाओं की योजना बनाई जा रही है। इनमें एक ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल, विद्युत संयंत्र और प्रस्तावित टाउनशिप शामिल हैं। इन पहलों से समुद्री व्यापार, संपर्क और राष्ट्रीय सुरक्षा मजबूत होगी, साथ ही भारत के भू-रणनीतिक और आर्थिक हितों को भी बढ़ावा मिलेगा।

प्रमुख अवसंरचना घटक:

- गलाथिया बे बंदरगाह विकास: भारत के 13वें प्रमुख बंदरगाह के रूप में अधिसूचित, जिसमें सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल के तहत विकसित एक अंतर्राष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल शामिल है।
- एकीकृत टाउनशिप विकास: कार्यबल आवास और क्षेत्रीय सेवा प्रावधान का समर्थन करना
- विद्युत उत्पादन सुविधाएं: औद्योगिक और आवासीय आवश्यकताओं के लिए विश्वसनीय ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करना
- परिवहन नेटवर्क: उत्पादन सुविधाओं को प्रसंस्करण और निर्यात अवसंरचना से जोड़ना

ये अवसंरचना निवेश व्यापक आर्थिक विकास के लिए आधारभूत परिस्थितियाँ बनाते हैं। इसके अलावा, ये अपतटीय जलकार्बन संचालन की तकनीकी आवश्यकताओं का भी समर्थन करते हैं।

नियामक ढांचे का विकास और बाज़ार पहुंच

भारत में अपतटीय जलकार्बन विकास के प्रति अपनाए गए नियामक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। यह परिवर्तन प्रतिबंधात्मक नीतियों से हटकर अधिक खुले और प्रतिस्पर्धी लाइसेंसिंग ढांचे की ओर अग्रसर है। परिणामस्वरूप, यह सफल अपतटीय विकास के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण तकनीकी और वित्तीय आवश्यकताओं की मान्यता को दर्शाता है।

नीति परिवर्तन और पहुंच संवर्धन

सबसे महत्वपूर्ण नियामक विकास पूर्व में प्रतिबंधित अन्वेषण क्षेत्रों को मुक्त करना है। एडमिरल डी. के. जोशी ने बताया कि 6 लाख वर्ग किलोमीटर के 'नो-गो ज़ोन' का 63.5 प्रतिशत हिस्सा तेल अन्वेषण के लिए मुक्त कर दिया गया है। यह लगभग 381,000 वर्ग किलोमीटर के नए सुलभ अन्वेषण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

नियामक विकास की समयरेखा:

- ऐतिहासिक प्रतिबंध: बड़े अपतटीय क्षेत्र जिन्हें पहले अन्वेषण निषेध क्षेत्र घोषित किया गया था
- नीति समीक्षा: प्रतिबंधों के औचित्य और व्यावसायिक क्षमता का व्यवस्थित मूल्यांकन
- क्रमिक मुक्ति: वाणिज्यिक अन्वेषण के लिए पहले प्रतिबंधित क्षेत्रों को चरणबद्ध तरीके से खोलना
- बेहतर पहुंच: व्यापक बेसिन मूल्यांकन को सक्षम बनाने वाला वर्तमान ढांचा

यह नियामकीय परिवर्तन घरेलू संसाधनों के उपयोग के माध्यम से ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाली व्यापक सरकारी पहलों के अनुरूप है।

लाइसेंसिंग तंत्र और ऑपरेटर चयन

आधुनिक लाइसेंसिंग ढांचे प्रतिस्पर्धी बोली, तकनीकी क्षमता मूल्यांकन और प्रदर्शन-आधारित अनुबंध संरचनाओं पर ज़ोर देते हैं। इन तंत्रों का उद्देश्य योग्य संचालकों को आकर्षित करना और साथ ही राष्ट्रीय लाभ के लिए संसाधनों का इष्टतम विकास सुनिश्चित करना है।

प्रमुख लाइसेंसिंग फ्रेमवर्क तत्व:

- खुली भूमि लाइसेंसिंग नीति (ओएएलपी): निरंतर बोली प्रक्रिया और ब्लॉक आवंटन को सक्षम बनाना
- हाइड्रोकार्बन अन्वेषण एवं लाइसेंसिंग नीति (हेल्प): अनुमोदन प्रक्रियाओं और अनुबंध शर्तों को सरल बनाना
- तकनीकी मूल्यांकन मानदंड: संचालकों की क्षमताओं और विकास योजनाओं का आकलन
- राजस्व साझाकरण मॉडल: निवेशकों के प्रतिफल और सरकारी राजस्व के बीच संतुलन बनाना

यह ढांचा पारदर्शिता, प्रतिस्पर्धी प्रक्रियाओं और तकनीकी उत्कृष्टता पर ज़ोर देता है। इसके अलावा, यह पर्याप्त निवेश प्रतिबद्धताओं के लिए पर्याप्त व्यावसायिक प्रोत्साहन प्रदान करता है।

तकनीकी चुनौतियाँ और विकास समयसीमा

अपतटीय जलकार्बन विकास में अद्वितीय तकनीकी चुनौतियाँ सामने आती हैं जो परियोजना की समयसीमा और व्यावसायिक व्यवहार्यता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। अण्डमान बेसिन में तेल अन्वेषण के लिए गहरे पानी का वातावरण इन चुनौतियों को और भी जटिल बना देता है, साथ ही इसके लिए विशेष तकनीकी समाधानों की आवश्यकता होती है।

गहरे जल वातावरण में परिचालन संबंधी जटिलता

गहरे जलक्षेत्र में परिचालन के लिए अत्याधुनिक उपकरणों, विशेष पोतों और उन्नत तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। इन आवश्यकताओं के कारण लागत का दबाव और समयसीमा में वृद्धि होती है, जिनका परियोजना विकास के दौरान सावधानीपूर्वक प्रबंधन करना आवश्यक है।

प्रमुख तकनीकी चुनौतियाँ:

- जल गहराई प्रबंधन: इसके लिए विशेष ड्रिलिंग और उत्पादन उपकरणों की आवश्यकता होती है।
- भूवैज्ञानिक जटिलता: उन्नत भूकंपीय व्याख्या और ड्रिलिंग तकनीकों की आवश्यकता
- मौसम की स्थिति: मानसून के प्रभावों का प्रबंधन और समुद्री स्थिति संबंधी सीमाएँ
- रसद समन्वय: मुख्यभूमि आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ दूरस्थ संचालन का समर्थन करना

"गहरे जल विकास की तकनीकी मांगों के लिए लंबी अवधि में विशेष उपकरणों और कार्यबल विकास में निरंतर निवेश की आवश्यकता होती है।"

विकास समयरेखा संबंधी विचार

अपतटीय परियोजनाओं में आमतौर पर प्रारंभिक अन्वेषण से लेकर वाणिज्यिक उत्पादन तक व्यापक विकास अवधि की आवश्यकता होती है। ये समयसीमा तकनीकी संचालन, नियामक अनुमोदन और बुनियादी ढांचा विकास आवश्यकताओं की जटिलता को दर्शाती हैं।

विकास के सामान्य चरण:

- प्रारंभिक अन्वेषण: भूवैज्ञानिक आकलन और संसाधन पुष्टि के लिए 2–4 वर्ष
- मूल्यांकन गतिविधियाँ: विस्तृत जलाशय लक्षण वर्णन के लिए 1–3 वर्ष
- विकास योजना: इंजीनियरिंग डिज़ाइन और नियामक अनुमोदन के लिए 2–3 वर्ष।
- निर्माण एवं स्थापना: अवसंरचना विकास के लिए 3–5 वर्ष
- उत्पादन बढ़ाने में लगने वाला समय: इष्टतम उत्पादन दर प्राप्त करने में 1–2 वर्ष लगेंगे

इन विस्तारित समयसीमाओं के लिए निरंतर वित्तीय प्रतिबद्धता और तकनीकी एकाग्रता की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, इनमें विकास प्रक्रिया के दौरान विभिन्न वाणिज्यिक और परिचालन जोखिमों का प्रबंधन भी शामिल होता है।

वैश्विक मानकीकरण और तुलनात्मक विश्लेषण

अण्डमान बेसिन की क्षमता को समझने के लिए विश्व स्तर पर सफल अपतटीय विकास परियोजनाओं से तुलना करना आवश्यक है। ये तुलनात्मक अध्ययन विकास रणनीतियों, तकनीकी दृष्टिकोणों और व्यावसायिक परिणामों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। हालांकि, ओपेक के उत्पादन पर प्रभाव और ऊर्जा निर्यात संबंधी चुनौतियों सहित वैश्विक बाज़ार की स्थितियां विकास संबंधी निर्णयों को प्रभावित करती हैं।

गुयाना मॉडल का विश्लेषण और प्रयोज्यता

गुयाना की अपतटीय सफलता से तुलना करने पर अण्डमान बेसिन में तेल अन्वेषण के संभावित विकास मार्गों के बारे में बहुमूल्य जानकारी मिलती है। एक्सॉनमोबिल के स्टैब्रोक ब्लॉक में हुई खोजें दर्शाती हैं कि कैसे व्यवस्थित अन्वेषण और उन्नत प्रौद्योगिकी से गहरे पानी के महत्वपूर्ण संसाधनों को उजागर किया जा सकता है।

गुयाना की सफलता के कारक:

- व्यवस्थित अन्वेषण दृष्टिकोण: व्यापक भूवैज्ञानिक और भूभौतिकीय अध्ययन
- उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग: अत्याधुनिक ड्रिलिंग और उत्पादन प्रौद्योगिकियां
- एकीकृत विकास रणनीति: समन्वित अवसंरचना एवं उत्पादन योजना
- मजबूत संचालक क्षमताएं: सिद्ध तकनीकी विशेषज्ञता और वित्तीय संसाधन

गुयाना मॉडल विकास प्रक्रिया के दौरान निरंतर तकनीकी उत्कृष्टता और पर्याप्त वित्तीय प्रतिबद्धता के महत्व पर ज़ोर देता है।

क्षेत्रीय तुलनात्मक ढांचा

दक्षिणपूर्व एशियाई अपतटीय विकास अण्डमान बेसिन विकास रणनीतियों के लिए अतिरिक्त मानकीकरण के अवसर प्रदान करते हैं। मलेशिया, इंडोनेशिया और थाईलैंड जैसे देशों ने विभिन्न तकनीकी और वाणिज्यिक दृष्टिकोणों के माध्यम से गहरे पानी के संसाधनों का सफलतापूर्वक विकास किया है।

क्षेत्रीय विकास के प्रतिरूप:

- मलेशिया की डीपवाटर सफलता: पेट्रोनास की क्षमताओं और अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों का लाभ उठाना
- इंडोनेशिया का बेसिन विकास: विविध भूवैज्ञानिक स्थितियों में कई संचालकों का समन्वय
- थाईलैंड का खाड़ी अन्वेषण: व्यवस्थित संसाधन विकास और अवसंरचना एकीकरण का प्रदर्शन

ये क्षेत्रीय उदाहरण अपतटीय विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों को उजागर करते हैं। इसके अलावा, वे निरंतर तकनीकी और वित्तीय प्रतिबद्धता के महत्व पर भी बल देते हैं।

निवेश के अवसर और बाज़ार की गतिशीलता

अण्डमान बेसिन के विकास से हाइड्रोकार्बन मूल्य श्रृंखला में विविध निवेश अवसर उत्पन्न होते हैं। इन अवसरों में अन्वेषण और उत्पादन गतिविधियाँ, सहायक सेवाएँ और अवसंरचना विकास शामिल हैं।

अपस्ट्रीम सेक्टर निवेश परिदृश्य

अन्वेषण और उत्पादन गतिविधियों में प्रत्यक्ष भागीदारी निवेश का मुख्य अवसर है। हालांकि, इन पदों के लिए पर्याप्त तकनीकी विशेषज्ञता और वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है।

निवेश श्रेणियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- प्राथमिक संचालक: अन्वेषण और उत्पादन लाइसेंस रखने वाली कंपनियाँ
- संयुक्त उद्यम भागीदार: वे संस्थाएँ जो तकनीकी और वित्तीय जोखिमों को साझा करती हैं।
- सेवा प्रदाता: अन्वेषण और विकास गतिविधियों में सहयोग देने वाली विशेषीकृत कंपनियाँ
- उपकरण आपूर्तिकर्ता: विशेषीकृत अपतटीय उपकरणों के निर्माता और आपूर्तिकर्ता

अवसंरचना निवेश के अवसरों का समर्थन करना

अपतटीय विकास के लिए आवश्यक अवसंरचना से सहायक उद्योगों और सेवाओं में पर्याप्त निवेश के अवसर उत्पन्न होते हैं।

अवसंरचना निवेश क्षेत्र:

- बंदरगाह और टर्मिनल विकास: अपतटीय संचालन और उत्पाद प्रबंधन में सहयोग
- पाइपलाइन और परिवहन: अपतटीय उत्पादन को तटवर्ती प्रसंस्करण से जोड़ना
- प्रसंस्करण सुविधाएं: शोधन और पेट्रोकेमिकल संचालन
- विद्युत उत्पादन: औद्योगिक और क्षेत्रीय ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति

ये सहायक निवेश अक्सर अधिक अनुमानित प्रतिफल प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, इन्हें अपतटीय संसाधनों के व्यापक विकास से लाभ मिलता है।

भविष्य की संभावनाएं और रणनीतिक निहितार्थ

अण्डमान बेसिन का विकास भारत की व्यापक ऊर्जा रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक है। परिणामस्वरूप, यह घरेलू संसाधन विकास और ऊर्जा परिवर्तन के उद्देश्यों के बीच संतुलन स्थापित करता है। इस संतुलन के लिए दीर्घकालिक ऊर्जा आवश्यकताओं और पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं पर सावधानीपूर्वक विचार करना आवश्यक है।

ऊर्जा संक्रमण एकीकरण

भारत के व्यापक ऊर्जा परिवर्तन लक्ष्यों के अनुरूप जलकार्बन विकास होना चाहिए, साथ ही परिवर्तन काल के दौरान आवश्यक ऊर्जा सुरक्षा भी प्रदान करनी चाहिए।

रणनीतिक संतुलन संबंधी विचार:

- घरेलू उत्पादन के लाभ: आयात पर निर्भरता कम करना और ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाना
- प्राकृतिक गैस का उपयोग: स्वच्छ ऊर्जा अनुप्रयोगों और औद्योगिक प्रक्रियाओं को समर्थन देना
- प्रौद्योगिकी विकास: ऊर्जा क्षेत्र में व्यापक अनुप्रयोगों के लिए तकनीकी क्षमताओं का निर्माण करना
- आर्थिक विकास में सहयोग: ऊर्जा परिवर्तन के दौरान आर्थिक विकास में योगदान

क्षेत्रीय विकास दृष्टि

एडमिरल डी. के. जोशी ने आत्मनिर्भरता, नवाचार और नागरिक सशक्तिकरण के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने में द्वीपसमूह की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता पर ज़ोर दिया। प्रस्तावित परिवर्तन में इन द्वीपों को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में जहाज़ मरम्मत और जहाज़ निर्माण केंद्र के रूप में विकसित करना शामिल है। इसके अलावा, यह इनकी रणनीतिक समुद्री स्थिति का लाभ उठाता है।

दीर्घकालिक क्षेत्रीय दृष्टिकोण:

- समुद्री उद्योग केंद्र: क्षेत्रीय समुद्री गतिविधियों को सहयोग देने वाली जहाज़ निर्माण और मरम्मत सुविधाएं
- ऊर्जा प्रसंस्करण केंद्र: हाइड्रोकार्बन प्रसंस्करण और पेट्रोकेमिकल विकास
- रणनीतिक लॉजिस्टिक्स प्लेटफॉर्म: इंडो-पैसिफिक व्यापार और सुरक्षा उद्देश्यों का समर्थन करना
- प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र: अपतटीय और समुद्री प्रौद्योगिकी क्षमताओं को आगे बढ़ाना

क्षेत्रीय विकास के व्यापक उद्देश्यों के साथ जलकार्बन विकास का एकीकरण सतत आर्थिक विकास और रणनीतिक स्थिति के लिए तालमेलपूर्ण अवसर पैदा करता है। हालांकि, हाल ही में हुए गहरे पानी में अन्वेषण संबंधी निष्कर्षों के अनुसार, विकास के सभी चरणों में तकनीकी चुनौतियों के लिए सावधानीपूर्वक प्रबंधन की आवश्यकता है।

यह विश्लेषण सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी पर आधारित है और इसे निवेश सलाह नहीं माना जाना चाहिए। अपतटीय जलकार्बन विकास में महत्वपूर्ण तकनीकी और वित्तीय जोखिम शामिल हैं, और संभावित निवेशकों को निवेश संबंधी निर्णय लेने से पहले पूरी तरह से जांच-पड़ताल करनी चाहिए और योग्य पेशेवरों से परामर्श लेना चाहिए।

क्या भारत में तेल की बढ़ती मांग आपके निवेश पोर्टफोलियो को बदल सकती है?

भारत के अण्डमान बेसिन में तेल की खोज एक ऐसा क्रांतिकारी संसाधन विकास अवसर प्रस्तुत करती है, जिसकी शीघ्र पहचान होने पर निवेशकों को पर्याप्त लाभ मिल सकता है। डिस्कवरी अलर्ट का मालिकाना हक वाला डिस्कवरी आईक्यू मॉडल, एएसएक्स में सूचीबद्ध महत्वपूर्ण खनिज और ऊर्जा खोजों की वास्तविक समय में सूचना देता है, जिससे निवेशकों को व्यापक बाज़ार में पहचान मिलने से पहले ही ऐसी महत्वपूर्ण घोषणाओं का लाभ उठाने में मदद मिलती है। आज ही अपना 14-दिवसीय निःशुल्क परीक्षण शुरू करें और खोज संबंधी उपयोगी जानकारियों तक तुरंत पहुंच प्राप्त करके बाज़ार में अपनी बढ़त बनाएं। (स्रोत: **https://discoveryalert.com.au/**)

केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान में किसान मेला सह प्रदर्शनी सफलतापूर्वक संपन्न

श्री विजय पुरम, 1 मार्च

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर–सीआईएआरआई) में आयोजित किसान मेला–2026 सह प्रदर्शनी सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। इस आयोजन ने द्वीपसमूह भर के किसानों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों और विभिन्न हितधारकों को एक सशक्त मंच पर एकत्रित किया। यह कार्यक्रम नवीन कृषि तकनीकों के प्रसार, जलवायु–सहिष्णु खेती पद्धतियों को बढ़ावा देने तथा किसान–वैज्ञानिक संवाद को सुदृढ़ करने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुआ।

समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए. वेलमुरुगम, सहायक महानिदेशक (एसडब्ल्यूएम), आईसीएआर, नई दिल्ली ने की। इस अवसर पर आईसीएआर–सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर, कार निकोबार के सीटीसी से जनजातीय प्रमुख श्री लियोनाल्ड निकोमेड सहित वैज्ञानिक, अधिकारी, किसान और अन्य हितधारक उपस्थित रहे।

अपने समापन संबोधन में डॉ. ए. वेलमुरुगम ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए आयोजकों की सराहना की और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के कृषक समुदाय के लिए आईसीएआर–सीआईएआरआई के महत्वपूर्ण योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने द्वीपसमूह को "मिनी इंडिया" की संज्ञा देते हुए इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और विशिष्ट कृषि–जलवायु परिस्थितियों का उल्लेख किया, जो मुख्यभूमि से भिन्न हैं। कार निकोबार के सीटीसी से जनजातीय प्रमुख श्री लियोनाल्ड निकोमेड ने किसानों, विशेषकर जनजातीय किसानों के हित में किसान मेला आयोजित करने के लिए आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने ज़मीनी स्तर तक वैज्ञानिक ज्ञान और व्यावहारिक तकनीकों को पहुंचाने के लिए आईसीएआर–सीआईएआरआई की सराहना की।

आईसीएआर–सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर ने अपने संबोधन में कहा कि दो दिवसीय किसान मेला अत्यंत लाभकारी रहा और यह नवाचार आधारित कृषि तकनीकों तथा व्यावहारिक ज्ञान के आदान–प्रदान के लिए एक उत्कृष्ट मंच सिद्ध हुआ।

किसान मेले के अंतर्गत आयोजित फल एवं सब्ज़ प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रतिभागियों ने उन्नत कृषि पद्धतियों से उगाई गई उच्च गुणवत्ता वाली उपज का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता को दो वर्गों–फल एवं सब्जी–में विभाजित किया गया था, जिससे किसानों को अपनी श्रेष्ठ उपज प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहन मिला।

इससे पूर्व, दक्षिण अण्डमान के कृषि विज्ञान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वाई. रामकृष्ण ने गणमान्य अतिथियों एवं किसानों का स्वागत करते हुए किसान मेले की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन निकोबार के कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. संतोष कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार कार्यक्रम के समन्वय की ज़िम्मेदारी उत्तर व मध्य अण्डमान के कृषि विज्ञान केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ श्री यथार्थ शर्मा ने निभाई।

द्वीपसमूह के लिए गौरव का क्षण

सुश्री अमृता मिंज ने प्रथम बीच स्प्रिंट राष्ट्रीय रोइंग चैम्पियनशिप में जीता स्वर्ण पदक

श्री विजय पुरम, 1 मार्च

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के लिए अत्यंत गर्व के क्षण में, सुश्री अमृता मिंज ने गोवा में 24 से 28 फरवरी तक आयोजित प्रथम बीच स्प्रिंट राष्ट्रीय रोइंग चैम्पियनशिप में सीडब्ल्यू 1X स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर द्वीपसमूह का नाम रोशन किया है। इस प्रतिष्ठित चैम्पियनशिप का आयोजन रोइंग फेडरेशन ऑफ इंडिया की ओर से रोइंग एंड स्कलिंग एसोसिएशन डी गोवा द्वारा किया गया, जिसमें देशभर के शीर्ष रोइंग खिलाड़ी शामिल हुए। असाधारण दृढ़ संकल्प, कौशल और जुझारूपन का प्रदर्शन करते हुए सुश्री अमृता मिंज ने अपनी स्पर्धा में विजय प्राप्त की और राष्ट्रीय स्तर पर द्वीपसमूह को गौरवान्वित किया।

उल्लेखनीय है कि यह बीच स्प्रिंट राष्ट्रीय रोइंग चैम्पियनशिप देश में पहली बार आयोजित की गई, जो भारत में रोइंग के इस रोमांचक और तेजी से लोकप्रिय हो रहे प्रारूप की ऐतिहासिक शुरुआत है। उनकी यह उपलब्धि विशेष रूप से सराहनीय है, क्योंकि अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में पर्याप्त रोइंग अवसंरचना और उन्नत प्रशिक्षण सुविधाओं के अभाव के बावजूद उन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया। बेहतर संसाधनों और पेशेवर प्रशिक्षण वातावरण वाले खिलाड़ियों के बीच प्रतिस्पर्धा करते हुए उनकी सफलता उनके समर्पण, कड़ी मेहनत और अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

अण्डमान तथा निकोबार रोइंग एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री जी. भास्कर ने सुश्री अमृता मिंज को उनकी इस उत्कृष्ट उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी है। उन्होंने चैम्पियनशिप में विभिन्न स्पर्धाओं में भाग लेकर केंद्र शासित प्रदेश का उत्साह और खेल भावना के साथ प्रतिनिधित्व करने वाले अन्य रोइंग खिलाड़ियों को भी शुभकामनाएं एवं बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह उल्लेखनीय विजय द्वीपसमूह की खेल प्रतिभा की अपार संभावनाओं को रेखांकित करती है तथा स्थानीय स्तर पर रोइंग अवसंरचना और व्यवस्थित प्रशिक्षण सुविधाओं को सुदृढ़ करने की आवश्यकता को दर्शाती है, ताकि खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिस्पर्धा कर सकें। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार श्री जी. भास्कर ने रोइंग फेडरेशन ऑफ इंडिया से यह भी आग्रह किया है कि अगली बीच स्प्रिंट राष्ट्रीय रोइंग चैम्पियनशिप का आयोजन अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में किया जाए। सुंदर और विस्तृत समुद्र तटों से संपन्न यह द्वीपसमूह बीच स्प्रिंट रोइंग प्रतियोगिताओं के लिए अत्यंत उपयुक्त है। ऐसे राष्ट्रीय स्तर के आयोजन से न केवल द्वीपसमूह में जल क्रीड़ाओं को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि खेल पर्यटन को भी प्रोत्साहन मिलेगा तथा स्थानीय खिलाड़ियों को व्यापक मंच और अनुभव प्राप्त होगा।

मायाबंदर और लिटिल अण्डमान में एस्ट्रो गाइड प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए आवेदन 2 मार्च तक

श्री विजय पुरम, 1 मार्च।

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के पर्यटन विभाग द्वारा एस्ट्रो गाइड हेतु कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण 5 से 7 मार्च, 2026 तक उत्तर व मध्य अण्डमान के मायाबंदर में तथा 10 से 12 मार्च, 2026 तक लिटिल अण्डमान में आयोजित होगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एस्ट्रो–टूरिज़्म के क्षेत्र में स्थानीय क्षमता का विकास करना है। प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रतिभागियों को रात्रिकालीन आकाश अवलोकन, खगोल विज्ञान की मूलभूत जानकारी, दूरबीन संचालन, व्याख्या तकनीक तथा ज़िम्मेदार एस्ट्रो–टूरिज़्म व्यवहार से संबंधित आवश्यक ज्ञान एवं व्यावहारिक कौशल प्रदान किए जाएंगे। यह पहल द्वीपों में पर्यटन के विविधीकरण और सतत, अनुभव–आधारित पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में विभाग के प्रयासों का हिस्सा है। स्थानीय युवा, पर्यटन से जुड़े हितधारक एवं प्रकृति प्रेमी इस अवसर का लाभ उठाकर अपने कौशल को उन्नत कर सकते हैं तथा एस्ट्रो–टूरिज़्म के क्षेत्र में उभरते आजीविका अवसरों का अन्वेषण कर सकते हैं।

पात्रता मानदंड:

आयु: 40 वर्ष से कम

शैक्षणिक योग्यता: किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड/विश्वविद्यालय से न्यूनतम 12वीं उत्तीर्ण।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इच्छुक अभ्यर्थी पर्यटन विभाग की वेबसाइट **tourism.andamannicobar.gov.in** से आवेदन पत्र डाउनलोड कर सकते हैं या दिए गए गूगल फॉर्म लिंक **https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeBQ_lHhnCGhcKLT4bFDO3VWO9bL0Cu0B5HRND7c4qXlQ8M2w/viewform?usp=publish-editor** के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। पूर्ण रूप से भरे हुए आवेदन पत्र 2 मार्च को शाम 3 बजे तक पर्यटन निदेशालय के योजना अनुभाग में जमा करना अनिवार्य है।

'हरित भविष्य के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' कार्यशाला सम्पन्न

श्री विजय पुरम, 1 मार्च

भारतीय प्राणी सर्वेक्षण के अण्डमान तथा निकोबार क्षेत्रीय केंद्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला 'हरित भविष्य के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' का समापन कल हुआ। कार्यक्रम में आठ विशेषज्ञ व्याख्यान शामिल थे, जिनमें कौशल विकास एवं क्षमता विकास पर विशेष सत्र आयोजित किए गए। कार्यशाला में कुल 76 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र–छात्राएं एवं शिक्षक शामिल थे। इनमें जेएनआरएम, राजकीय बालक वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजकीय मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कामराज अंग्रेजी माध्यम स्कूल, सागरितारा स्कूल, टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, अण्डमान

कॉलेज (एनकॉल), अण्डमान लॉ कॉलेज एवं पांडिचेरी विश्वविद्यालय के प्रतिभागियों के साथ–साथ ग्रीन स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम (जीएसडीपी) के प्रशिक्षु भी सम्मिलित थे।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार समापन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. दिनेश कन्नन (आईएफएस), मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव), पर्यावरण एवं वन विभाग, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम केवल उत्तर प्रदान नहीं करते, बल्कि प्रतिभागियों को आलोचनात्मक चिंतन के लिए प्रेरित करते हुए वैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय विषयों में गहरी रुचि विकसित करने में सहायक होते हैं। डॉ. सी. शिवपेरुमन, वैज्ञानिक–एफ/प्रभारी अधिकारी, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह ने बताया कि गत दो दिनों में आयोजित इस कार्यशाला में प्रख्यात वैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों द्वारा सतत एवं हरित भविष्य से संबंधित विविध विषयों पर आठ विशेषज्ञ व्याख्यान प्रस्तुत किए गए।

एबी–एसएचडब्ल्यूपी के अंतर्गत नोडल शिक्षकों के लिए पुनश्चर्या प्रशिक्षण–सह–प्रदर्शनी आयोजित

श्री विजय पुरम, 1 मार्च

शिक्षा निदेशालय के विज्ञान प्रकोष्ठ द्वारा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की संयुक्त पहल आयुष्मान भारत–स्कूल स्वास्थ्य एवं आरोग्य कार्यक्रम (एबी–एसएचडब्ल्यूपी) के अंतर्गत स्वास्थ्य एवं आरोग्य एम्बेस्डर (एचडब्ल्यूए) पर सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों (दक्षिण, उत्तर व मध्य तथा निकोबार ज़िला) के प्रशिक्षित नोडल शिक्षकों के लिए 26 से 28 फरवरी तक शिक्षा सदन के सम्मेलन कक्ष में तीन दिवसीय पुनश्चर्या 'प्रशिक्षण–सह–प्रदर्शनी' का आयोजन स्वास्थ्य विभाग, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के सहयोग से किया गया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री ज्ञान शील दुबे, प्रधान कार्यालयाध्यक्ष, शिक्षा निदेशालय, श्री विजय पुरम तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. शाइनी वर्गीज़, उप निदेशक (परिवार कल्याण), स्वास्थ्य सेवा निदेशालय द्वारा किया गया। प्रशिक्षण–सह–प्रदर्शनी में सभी शैक्षिक अंचलों से कुल 55 शिक्षक, जिनमें जीटीटी, पीईटी एवं पीजीटी शामिल थे, ने भाग लिया। द्वितीय दिवस पर कालीकट विद्यालय का शैक्षिक भ्रमण आयोजित किया गया, जहां शिक्षकों ने विद्यार्थियों के समक्ष अपने अभिनव एवं उत्कृष्ट शिक्षण–अधिगम सामग्री (टीएलएम) का प्रदर्शन किया। इस संवाद ने विद्यार्थियों में विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज आयोजित समापन सत्र में उप निदेशक शिक्षा (विज्ञान) श्री राम प्रवेश मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

गांधी नगर में 'पशुपालन में एकीकृत कृषि प्रणाली' पर प्रशिक्षण सम्पन्न

श्री विजय पुरम, 1 मार्च

पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग ने केन्द्रशासित प्रदेश कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (यूटीएटीएमए) के सहयोग से ग्रेट निकोबार के कैम्पबेल बे स्थित गांधी नगर में 'पशुपालन में एकीकृत कृषि प्रणाली' विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य टिकाऊ एवं लाभकारी एकीकृत खेती मॉडल को बढ़ावा देना था, जिसमें पशुधन को फसल उत्पादन के साथ वैज्ञानिक ढंग से जोड़ना, संसाधनों का पुनर्चक्रण तथा दोहरे उद्देश्य वाली खेती पद्धतियों को अपनाकर ग्रामीण किसानों की आय एवं उत्पादकता में वृद्धि करना शामिल था। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार प्रतिभागियों को पशुपालन और कृषि के समन्वित उपयोग के माध्यम से संसाधनों के बेहतर उपयोग तथा वर्षभर आय सृजन के संबंध में व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में उत्साहपूर्ण सहभागिता देखी गई और अपेक्षा है कि इससे अधिक से अधिक किसान बेहतर आजीविका एवं पोषण सुरक्षा के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।

15 प्रतिभागियों को मिला पोल्ट्री टीकाकरण एवं कृमिनाशन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण

हटबे, 1 मार्च

पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग ने कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए) के सहयोग से लिटिल अण्डमान के आरके पुर स्थित श्रीमती जलपना मिस्त्री के खेत पर 'पोल्ट्री में टीकाकरण एवं कृमिनाशन के महत्व' विषय पर व्यावहारिक प्रदर्शन आयोजित किया। इस कार्यक्रम में कुल 15 प्रतिभागियों, जिनमें अधिकांश स्वयं सहायता समूह के सदस्य थे, ने पोल्ट्री पक्षियों के टीकाकरण एवं कृमिनाशन का प्रत्यक्ष प्रदर्शन देखा तथा झुंड के स्वास्थ्य संरक्षण एवं मृत्यु दर रोकने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विभाग के सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक डॉ. आर.के. सिंह ने उत्तम प्रबंधन पद्धतियों पर अपने बहुमूल्य सुझाव साझा किए। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को वैज्ञानिक प्रबंधन को प्रोत्साहित करने हेतु 3,200 रुपये मूल्य का पोल्ट्री आहार वितरित किया गया। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इसके अतिरिक्त, एक अन्य स्थान पर दो दुग्ध किसानों को घर–आधारित चारा प्लॉट विकास प्रारंभ करने के लिए चारा तना कलमें भी उपलब्ध कराई गईं। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती प्रोमिला राय, पशु सखी द्वारा किया गया।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

सीबीआईसी ने पात्र निर्माता आयातकों के लिए सीमा शुल्क के तुरंत भुगतान से छूट की सुविधा शुरू की

नई दिल्ली, 01 मार्च।

केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा–शुल्क बोर्ड ने पात्र निर्माता आयातकों के लिए सीमा–शुल्क के तुरंत भुगतान से छूट की सुविधा शुरू की है। यह सुविधा 1 अप्रैल, 2026 से 31 मार्च, 2028 तक जारी रहेगी। बोर्ड ने इसकी अधिसूचना जारी कर दी है।

अधिसूचना के अनुसार, अब पात्र निर्माता आयातक निकासी के समय सीमा–शुल्क का भुगतान तत्काल किए बगैर भी आयातित वस्तुएं ले जा सकेंगे। इन आयातित वस्तुओं पर लागू शुल्क का भुगतान मासिक आधार पर किया जा सकेगा। इससे निर्माताओं को नकदी और कार्यशील पूंजी बनाए रखने में मदद मिलेगी। वित्त मंत्रालय के अनुसार, इससे व्यापार आसान होगा और घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा मिलेगा

वित्त मंत्रालय ने कहा कि इस सुविधा के लिए कल से ऑनलाइन आवेदन किए जा सकेंगे। आवेदन के लिए वेबसाइट है– eoindia.gov.in

तमिलनाडु सरकार ने खाड़ी देशों में फंसे राज्य के निवासियों के लिए शुरू किया हेल्पलाइन नंबर

नई दिल्ली, 01 मार्च।

तमिलनाडु सरकार ने खाड़ी देशों में रहने वाले या घूमने गए राज्य के निवासियों के लिए एक हेल्पलाइन नंबर शुरू किया है। नई दिल्ली स्थित कंट्रोल रूम के नंबर 011–2419 3300 और 9289516712 हैं। भारत में अनिवासी तमिल कल्याण विभाग की हेल्पलाइन 1800 309 3793 है। 91 80 6900 9900 या 91 80 6900 9901 पर मिस्ड कॉल भी दी जा सकती है।

इज़राइल और ईरान के बीच अचानक बढ़े तनाव के कारण चेन्नई से दुबई, अबू धाबी और दोहा जैसे मध्य पूर्व के गंतव्यों के लिए कई उड़ानें रद्द कर दी गई हैं। कल चेन्नई से विभिन्न एयरलाइनों द्वारा संचालित कम से कम 15 उड़ानें रद्द की गईं हैं। इंडिगो, ओमान एयर, एयर अरबिया, एमिरेट्स, कतर और ओमान एयरलाइंस की अंतरराष्ट्रीय उड़ानों ने भी मध्य पूर्व के कई हिस्सों के लिए उड़ानें रद्द कर दी हैं।

इपीएफओ देता है 7 तरह का पेंशन, विकलांग, अनाथ, बच्चे और माता–पिता को इस तरह मिलेगा लाभ

नई दिल्ली, 01 मार्च।

इपीएफओ अपने कर्मचारियों को कई तरह की सुविधाएं देती है. जिसमे कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को लाभ प्रदान किया जाता है. EPFO EPS–1995 के तहत कर्मचारियों को 7 तरह की पेंशन उपलब्ध कराई जाती है. सभी को क्लेम करने के लिए अलग–अलग परिस्थितियों के अनुसार पेंशन का लाभ दिया जाता है जिसमें सुपर एनुवेशन, पूर्व पेंशन, विकलांगता पेंशन और चार अलग पेंशन को जोड़कर सात तरह के पेंशन का लाभ दिया जाता है.

ईपीएफओ कर्मचारियों को सुपर एनुवेशन या वृद्धावस्था पेंशन का लाभ देते है जिसमे कर्मचारियों की 10 साल की सदस्यता और 58 वर्ष की आयु पूरी होने पर इसका लाभ प्रदान किया जाता है, जिसमे 10 साल की सदस्यता पूरी हो गई हो और 58 साल की आयु है तो उसके अगले दिन से ही पेंशन का लाभ देना शुरू कर दिया जाता है.

अगर किसी कर्मचारी का पीएफ खाता है और वह कंपनी में 10 साल तक काम करते है और 10 साल के बाद नौकरी छोड़ देते है और कुछ ऐसा काम करते है जहां ईपीएफ का नियम लागू नहीं होता है तो वह 50 साल की आयु पूरे होने पर पेंशन का लाभ ले सकते है अगर आप 58 वर्ष से पहले पेंशन का लाभ लेते है तो वह पूर्व पेंशन कहलाता है.

अगर आप पूर्व पेंशन का लाभ लेते है तो आपके आयु के अनुसार ही 4 फीसदी पैसे काटकर पेंशन का लाभ दिया जाता है. मान लीजिए अगर कोई 58 वर्ष की आयु में 10 हजार रुपये पेंशन का हकदार होता है तो उसे 57 वर्ष की आयु में पेंशन 4 फीसदी दर कम करते 9,600 रुपये पेंशन दिया जाएगा.इसी तरह 56 साल की आयु में इसे पेंशन 9,216 रुपये पेंशन मिलेगी.

अगर कर्मचारी किसी कारणवश विकालंग होने की स्थिति में रहते है जिसके कारण उन्हे नौकरी छोड़नी पर रही है तो उन्हे विकलांगता पेंशन का लाभ दिया जाता है इसके साथ ही इस पेंशन स्कीम का लाभ देने के लिए कोई न्यूनतम सदस्यता सीमा भी तय नहीं की गई है इसके साथ ही कर्मचारी अगर इस पेंशन का लाभ लेना चाहते तो कम से कम उनका 1 महीने का अंशदान का होना आवश्यक है.

अगर किसी सदस्य की दुर्भाग्यपूर्ण मौत हो जाती है तो उसकी पत्नी और दो बच्चों को पेंशन दी जाती है. अगर दो से ज्यादा बच्चे हैं तो 25 की आयु पूरे होने तक पहले दो बच्चों को पेंशन दी जाती है. जब बड़े बेटे की उम्र 25 साल हो जाती है तो उसकी पेंशन रोक दी जाती है और तीसरे बच्चे की पेंशन शुरू हो जाती है. यही क्रम आगे चलता रहता है जब तक की सभी बच्चों की उम्र 25 साल नहीं हो जाती.

ईपीएस 1995 के तहत अगर किसी कर्मचारी और उनके जीवनसाथी की भी मृत्यु हो जाती है तो ऐसी स्थिति में अनाथ पेंशन स्कीम का लाभ दिया जाता है जिसका लाभ कर्मचारी के बच्चों को दिया जाता है. इसके अलावा नामांकित पेंशन सदस्य के द्वारा नामांकित व्यक्ति को पेंशन दी जाती है. इस पेंशन योजना के तहत नामांकन तभी संभव है, जब सदस्य के परिवार में कोई जीवित न हो. परिवार से मतलब पत्नी–बच्चों से है.

अगर पेंशनर्स अविवाहित हो और उसकी मौत हो जाती है. साथ ही सदस्य ने किसी को नामांकित भी नहीं किया है तो उसके पिता को पेंशन दी जाती है. ईपीएस के तहत पेंशन का लाभ उठाने के लिए ऑनलाइन अप्लाई करना जरूरी है. अगर आप पेंशन के लिए अप्लाई नहीं करते हैं तो आपको पेंशन का लाभ नहीं मिलेगा.

मुंबई के डॉक्टरों ने 10 साल से दृष्टिहीन गायनेकोलॉजिस्ट की आंखों की लौटाई रोशनी; दुनिया की ऐसी पहली सर्जरी

मुम्बई, 01 मार्च।

मुंबई की एक 44 वर्षीय गायनेकोलॉजिस्ट पिछले 10 वर्षों से गंभीर ग्लूकोमा और आंखों की जटिल बीमारियों के कारण पूरी तरह अंधी हो चुकी थीं, उनकी आंखों की रोशनी एक बेहद जटिल और दुनिया में अपनी तरह की पहली सर्जरी के जरिए वापस आ गई है।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में मुंबई के डॉक्टरों ने एक ऐसा कारनामा कर दिखाया है, जिसने पूरी दुनिया के सामने सर्जरी का एक नया कीर्तिमान भी स्थापित किया है।

मरीज पिछले एक दशक से विजन लॉस का सामना कर रही थीं। उनकी दाहिनी आंख की रोशनी पूरी तरह जा चुकी थी और बाईं आंख से भी उन्हें केवल रोशनी का आभास (Perception of Light) हो रहा था। पूर्व में कई सर्जरी होने के बावजूद उनकी स्थिति में सुधार नहीं हुआ था।

डॉक्टरों के अनुसार, उनकी बाईं आंख में लगा पुराना कृत्रिम लेंस (IOL) अपनी जगह से खिसक गया था और कॉर्निया व आइरिस को गंभीर नुकसान पहुंचा रहा था।

डॉ. अग्रवाल्स आई हॉस्पिटल की सर्जिकल टीम ने इस चुनौती को स्वीकार किया। डॉ. सुसान जैकब के नेतृत्व में डॉक्टरों ने एक ही बार में कई जटिल प्रक्रियाओं को अंजाम दिया।

गलत जगह लगे लेंस को हटाकर नई तकनीक से नया लेंस लगाया गया। यह दुनिया में अपनी तरह का पहला मामला है जहां इन सभी उन्नत तकनीकों का एक साथ उपयोग किया गया।

सर्जरी के तुरंत बाद मरीज की बाईं आंख की रोशनी 6/24 तक वापस आ गई है। यह उनके लिए जीवन बदलने वाला पल रहा, क्योंकि अब वह अपनी मेडिकल प्रैक्टिस और मरीजों की सेवा के लिए लौट चुकी हैं। डॉक्टरों को उम्मीद है कि जैसे–जैसे आंखें पूरी तरह ठीक होंगी, उनकी दृष्टि में और भी सुधार होगा।

यह सफलता न केवल भारत के लिए गर्व की बात है, बल्कि ग्लूकोमा और जटिल नेत्र रोगों से जूझ रहे दुनिया भर के मरीजों के लिए एक नई उम्मीद की किरण भी है।

नारी शक्ति से राष्ट्र निर्माणः दिल्ली में 7–8 मार्च को 'भारती' महिला विचारक सम्मेलन का आयोजन

नई दिल्ली, 01 मार्च।

महिला सशक्तीकरण और राष्ट्र के विकास में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करने के लिए यहां के विज्ञान भवन में 7–8 मार्च को दो दिवसीय राष्ट्रीय महिला विचारक सम्मेलन 'भारती' का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी राष्ट्र सेविका समिति, शरण्या और भारतीय विद्वत परिषद के पदाधिकारियों ने दिल्ली में कस्तूरबा गांधी मार्ग स्थित सिविल सेवा अधिकारी संस्थान में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में दी।

इस सम्मेलन का उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता करेंगी तथा समापन राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु की उपस्थिति में होगा। इसका आयोजन भारतीय विद्वत परिषद, राष्ट्र सेविका समिति और शरण्या ने संयुक्त रूप से किया है। यह कार्यक्रम भारती– नारी से नारायणी विषय पर आधारित होगा। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों की प्रबुद्ध महिलाओं को एक मंच पर लाना और 'विकसित भारत 2047' के संकल्प को साकार करने में उनके योगदान पर चर्चा करना है। इस सम्मेलन में आठ प्रमुख विषयों पर गहन विमर्श किया जाएगा। इनमें विद्या आत्मनिर्भरता मुक्ति चेतना प्रकृति संस्कृति सिद्धि और कृति शामिल हैं। इसके अलावा मुख्य सत्र पैनल चर्चा विशेषज्ञ शिक्षण सत्र पोस्टर प्रदर्शनी और कलात्मक प्रस्तुतियां शामिल होंगी।

आज समय है कि भारतीय महिलाएं अपने 'मातृत्व' और 'कर्तृत्व' के गुणों के साथ–साथ 'नेतृत्व' के गुण को भी विस्तार दें। इस कार्यक्रम का ध्येय विभिन्न क्षेत्रों की महिलाओं को एकजुट कर उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान करना है जहां से वे समाज के नव–निर्माण का नेतृत्व कर सकें।

इतिहास के पन्नों में 02 मार्च : 'भारत की कोकिला' सरोजिनी नायडू को राष्ट्र ने खोया

नई दिल्ली, 01 मार्च।

इतिहास में 02 मार्च का दिन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और साहित्य जगत के लिए गहरी संवेदना का दिन है। 2 मार्च 1949 को महान स्वतंत्रता सेनानी, कवयित्री और महिला अधिकारों की प्रबल आवाज सरोजिनी नायडू का निधन हुआ था। अपनी ओजपूर्ण लेखनी और प्रभावशाली वाणी के कारण उन्हें 'भारत की कोकिला' के नाम से सम्मानित किया गया।

13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में जन्मीं सरोजिनी नायडू के पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय निज़ाम कॉलेज के प्राचार्य थे। प्रारंभ से ही वह मेधावी छात्रा थीं। उन्होंने मद्रास यूनिवर्सिटी से शिक्षा ग्रहण की और आगे की पढ़ाई के लिए लंदन के किंग्स कॉलेड लंदन तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के गिरटन कॉलेज में अध्ययन किया।

सरोजिनी नायडू ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। वह महिलाओं के अधिकारों की सशक्त समर्थक थीं और देशभर में अपने प्रेरक भाषणों से जनचेतना जगाती रहीं। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनीं, जो उस दौर में महिलाओं के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी। आजादी के बाद उन्हें उत्तर प्रदेश (तत्कालीन यूनाइटेड प्रोविंसेज) का राज्यपाल नियुक्त किया गया और इस तरह वह स्वतंत्र भारत की पहली महिला राज्यपाल बनीं।

महत्वपूर्ण घटनाक्रम– 1995 – इक्वाडोर एवं पेरू के मध्य चल रहे संघर्ष को समाप्त करने के लिए दोनों देशों के मध्य समझौता।

1999 – व्यापक परमाणु परीक्षण संधि (सी.टी.बी.टी.) पर हस्ताक्षर करने के लिए भारत के साथ किसी गुप्त समझौते के समाचार का सं.रा. अमेरिका द्वारा खंडन।

2002 – कूलम (आस्ट्रेलिया) में राष्ट्रमंडल शिखर सम्मेलन शुरू, पाकिस्तान को पुनः शामिल करने से इन्कार, फ़िलिस्तीन ने इस्रायल से सभी सम्बन्ध तोड़े।

2006– नई दिल्ली में भारत और अमेरिका के बीच ऐतिहासिक परमाणु समझौता सम्पन्न।

2009– चुनाव आयोग ने 15वीं लोकसभा के चुनाव 16 अप्रैल से 13 मई के बीच 5 चरणों में सम्पन्न करने की घोषणा की। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड और उसकी अनुषंगी रिलायंस पेट्रोलियम के निवेशकों के निदेशकों के बोर्ड ने दोनों कम्पनियों के विलय के प्रस्ताव को मंजूदी दी।

1498 – पुर्तगाली यात्री वास्को डी गामा और उनका बेड़ा अपनी पहली यात्रा के दौरान मोजाम्बीक द्वीप पहुंचे।

1807 – अमेरिकी कांग्रेस ने एक कानून पारित किया, जिसके तहत गुलामों के आयात पर रोक लगा दी गई, जो दास प्रथा के अंत की दिशा में एक अहम कदम था।

1931 – सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाचेव का जन्म हुआ, जिन्हें सुधारों की शुरुआत के लिए जाना जाता है।

1969 – ब्रिटेन के सुपरसोनिक विमान कॉनकॉर्ड ने अपनी पहली सफल उड़ान भरी और इसे 2080 किलोमीटर प्रति घंटे की गति तक उड़ाया जा सकता था।

क्या होता है क्रूज कंट्रोल? मोटरसाइकिल में किस तरह से करता है काम?

नई दिल्ली, 01 मार्च।

अब भारतीय बाजार में कम्यूटर मोटरसाइकिलों में क्रूज कंट्रोल का फीचर दिया जाने लगा है। दोपहिया निर्माता कंपनियां इसे प्रीमियम फीचर्स कहकर अपनी गाड़ियों में ऑफर कर रही है। वहीं, इसके बारे में अभी तक आपने काफी कुछ सुन लिया होगा। वही, बहुत से लोगों को कहना है कि भारत जैसी सड़कों पर जहां गड्ढे, ऑटो, ट्रैक्टर और कभी–कभी गाय भी एक ही लेन चलती हुई दिखाई देती है। हम यहां पर आपको क्रूज कंट्रोल होता क्या है? यह किस तरह से काम करता है? और इसके फायदे क्या है? इसके बारे में विस्तार में बता रहे हैं।

क्रूज़ कंट्रोल असल में एक ऐसा सिस्टम है जो आपकी बाइक की स्पीड को अपने–आप बनाए रखता है। बस एक बटन दबाइए, स्पीड सेट कीजिए और बाइक उसी गति पर चलती रहती है। आपको लगातार थ्रॉटल पकड़े रखने की जरूरत नहीं होती है।

मोटरसाइकिलों में क्रूज़ कंट्रोल दो तरह का होता है मैकेनिकल थ्रॉटल लॉक और इलेक्ट्रॉनिक क्रूज कंट्रोल। मैकेनिकल थ्रॉटल लॉक में थ्रॉटल को जगह पर पकड़कर रखता है और इलेक्ट्रॉनिक क्रूज कंट्रोल में सेंसर, माइक्रोचिप और सॉफ्टवेयर की मदद से स्पीड को सटीक रूप से बनाए रखा जाता है।

इलेक्ट्रॉनिक क्रूज कंट्रोल आजकल ज्यादा आम हो रहा है क्योंकि नई मोटरसाइकिल में राइड–बाय–वायर तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है। इसमें थ्रॉटल सीधे इंजन से जुड़ा नहीं होता, बल्कि सेंसर ECU (इंजन कंट्रोल यूनिट) को संकेत भेजते हैं। जब आप क्रूज कंट्रोल ऑन करते हैं, तो ECU खुद स्पीड को कंट्रोल करता है।

ब्रेक, क्लच या थ्रॉटल का हल्का सा स्पर्श भी क्रूज कंट्रोल को तुरंत बंद कर देता है यानी किसी भी आपात

स्थिति में बाइक का कंट्रोल तुरंत आपके हाथ में आ जाता है।

सबसे बड़ा सवाल यही है क्या यह फीचर भारत में काम का है? शहर की ट्रैफिक में इसका फायदा करीब नहीं के बराबर है। हाईवे और एक्सप्रेसवे पर आप लगातार एक स्पीड बनाए रख सकते हैं, यह काफी उपयोगी साबित होता है। हाईवे पर लंबी दूरी तय करते समय यह थकान कम करता है, और अनजाने में स्पीड बढ़ जाने से बचाता है। पहले यह फीचर सिर्फ महंगी विदेशी मोटरसाइकिल में आता था, लेकिन अब यह KTM, Hero और TVS जैसी अधिक किफायती मोटरसाइकिल में भी मिल रहा है।

क्रूज़ कंट्रोल सिर्फ स्पीड संभालता है यह स्टेयरिंग, ब्रेकिंग या सड़क पर दौड़ती बसों का ध्यान नहीं रखता है। भारतीय खरीदारों के मन में सबसे बड़ा सवाल सुरक्षा का होता है। इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम में सेटी चेक लगी होती है। ब्रेक, क्लच या थ्रॉटल छूते ही सिस्टम बंद हो जाता है। लेकिन पुराने मैकेनिकल थ्रॉटल लॉक उतने सुरक्षित नहीं होते। इसलिए जरूरी है कि आप अपनी बाइक के क्रूज सिस्टम को अच्छी तरह समझें, मैनुअल पढ़ें और पहले इसे सुरक्षित जगह पर टेस्ट करें।

रीढ़ की हड्डी मजबूत, पाचन बेहतर और तनाव दूर करने में कारगर 'सरल धनुरासन'

नई दिल्ली, 01 मार्च।

घंटों गलत पोस्चर में बैठे रहने से हड्डियां और मांसपेशियां न केवल कमजोर होती जाती हैं बल्कि शरीर कई रोगों की जद में आ जाता है। ऐसे में एक्सपर्ट बस कुछ मिनटों के लिए सरल धनुरासन के अभ्यास की सलाह देते हैं। यह आसन तन मन दोनों को स्वस्थ रखता है।

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने योग के माध्यम से स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए सरल धनुरासन की जानकारी साझा की है। यह आसन धनुरासन का आसान रूप है, जो शरीर को धनुष की तरह आकार देता है। यह न केवल रीढ़ की हड्डी को मजबूत और लचीला बनाता है, बल्कि पाचन तंत्र को बेहतर करने, तनाव कम करने और स्वास्थ्य सुधारने में भी मदद करता है।

इसके नियमित अभ्यास से झुके हुए कंधे सीधे होते हैं, पीठ की समस्याएं दूर होती हैं और ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। सरल धनुरासन एक आसान योग मुद्रा है, जिसे अभ्यास की शुरुआती स्टेज वाले लोग भी आसानी से कर सकते हैं। यह पेट के अंगों की मालिश करता है, जिससे कब्ज, अपच जैसी समस्याएं कम होती हैं। साथ ही यह थायरॉइड और एड्रिनल ग्रंथियों को संतुलित रखने में सहायक है, हार्मोनल असंतुलन को नियंत्रित करता है और मानसिक शांति देता है।

योग एक्सपर्ट का कहना है कि रोजाना कुछ मिनट इस आसन का अभ्यास करने से शरीर में लचीलापन आता है और शरीर के साथ ही मन भी स्वस्थ रहता है। सरल

धनुरासन के लिए सबसे पहले पेट के बल लेट जाएं। माथा जमीन पर रखें और पूरा शरीर आरामदायक स्थिति में हो। पैर सीधे और साथ–साथ रखें। अब घुटनों को मोड़ें और दोनों हाथों से टखनों (या एड़ियों) को अच्छी तरह पकड़ लें। इस दौरान गहरी सांस लें और धीरे–धीरे सिर, छाती तथा घुटनों को जमीन से ऊपर उठाएं। शरीर को धनुष की तरह आकार दें ताकि पीठ में खिंचाव महसूस हो। इस स्थिति में 10–20 सेकंड तक या जितना सहज हो सके रुकें, सामान्य सांस लेते रहें। इसके बाद धीरे–धीरे शुरुआती मुद्रा में आएं।

हालांकि, कुछ सावधानियां बरतनी भी जरूरी है। गर्भवती महिलाएं, हाई ब्लड प्रेशर, हर्निया, हाल की सर्जरी या गंभीर पीठ, गर्दन की समस्या वाले लोग बिना विशेषज्ञ सलाह के न करें। शुरुआत में ज्यादा जोर न लगाएं, धीरे–धीरे अभ्यास बढ़ाएं।

शरीर को वज्र की तरह मजबूत बना देगी हीरा भस्म, कैंसर, गठिया और दिल से जुड़े रोगों में भी लाभकारी

नई दिल्ली, 01 मार्च।

आयुर्वेद में दुर्लभ जड़ी–बूटियों की सहायता से रोगों का इलाज कई सालों से होता आया है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि जड़ी–बूटियों के अलावा, प्राकृतिक धातुओं से भी इलाज संभव है? आयुर्वेद में विभिन्न धातुओं द्वारा तैयार की गई भस्मों से भी लंबे समय से इलाज होता आया है। हीरा भस्म, हीरक भस्म या व्रज भस्म को भी आयुर्वेद में दवा की तरह इस्तेमाल किया जाता है, जो शरीर के सभी दोषों (वात, पित्त और कफ) के असंतुलन को दूर करती है और शरीर के किसी भी अंग से संबंधित पुरानी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

आयुर्वेद में हीरा भस्म एक महत्वपूर्ण औषधि है, जिसके सेवन से आयु और जीवन की गुणवत्ता में सुधार आता है और कुछ गंभीर बीमारियों में भी हीरा भस्म का इस्तेमाल सदियों से होता आया है, जैसे कैंसर, ट्यूमर, तपेदिक, मधुमेह, मोटापा और पुरानी एनीमिया की बीमारी से छुटकारा पाने में हीरा भस्म मदद करती है। आयुर्वेद में इसे 'वज्र भस्म' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह शुद्ध हीरे से तैयार की जाती है। इस भस्म को शुद्ध हीरे और कुछ दुर्लभ जड़ी–बूटियों के कई बार शोधन के बाद तैयार किया जाता है।

हीरे में कार्बन होता है, और इसमें रस सिंदूर और शुद्ध गंधक की बराबर मात्रा मिलाकर अच्छी तरह पीस लिया जाता है। फिर इसे एक डिब्बा बंद डिब्बे में हवा की अनुपस्थिति में गर्म किया जाता है, और इस प्रक्रिया को 14

बार दोहराया जाता है। इसकी एक ग्राम की कीमत हीरे की असल कीमत के कैलकुलेशन से तैयार की जाती है।

हीरे के समान कीमती ये भस्म कई रोगों में काम आती है। यह हृदय रोगों के लिए लाभकारी है। अगर दिल ठीक से रक्त का प्रवाह नहीं करता है या रक्त धमनियां कमजोर हैं, तो हीरा भस्म दिल को मजबूती देता है। इस भस्म का उपयोग अस्थमा, मधुमेह, मोटापा, बांझपन और सूजन संबंधी बीमारियों के इलाज में किया जाता है।

इसके अलावा, अगर रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर है तब भी हीरा भस्म टॉनिक की तरह काम करता है और शरीर में स्फूर्ति लाने में सहायक है। हीरा भस्म का इस्तेमाल कैंसर, गठिया और अस्थि मज्जा से जुड़े रोगों को दूर करने में भी होता आया है। ये प्राकृतिक रूप से स्मृति शक्ति बढ़ाकर मस्तिष्क को तेज बनाती है, जिससे एकाग्रता बढ़ती है। पुरुषों से जुड़ी शारीरिक कमजोरी में भी हीरा भस्म लाभकारी है।

नीति आयोग ने आकांक्षी ब्लॉकों में कुशल शासन को आगे बढ़ाने पर फ्रंटियर 50 कार्यशाला का किया आयोजन

नई दिल्ली, 01 मार्च।

नीति आयोग ने आकांक्षी जिला एवं ब्लॉक कार्यक्रम (एडीपी/एबीपी) के तहत फ्रंटियर 50 कार्यशाला का आयोजन किया। यह सार्वजनिक नीति में डिजिटल शासन से कुशल एआई–सक्षम शासन की ओर एक रणनीतिक परिवर्तन का प्रतीक है।

नीति आयोग ने जारी एक बयान में बताया कि इस कार्यशाला में नीति आयोग की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) निधि छिब्बर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रोफेसर अभय करंदीकर, नीति फ्रंटियर टेक्नोलॉजी की विशिष्ट फेलो और मुख्य वास्तुकार देबजानी घोष और नीति आयोग के अपर सचिव एवं मिशन निदेशक, आकांक्षी जिला एवं ब्लॉक कार्यक्रम के रोहित कुमार उपस्थित थे।

मंत्रालय के मुताबिक इस कार्यशाला में केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और जिला मजिस्ट्रेटों के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। विचार–विमर्श में 50 आकांक्षी ब्लॉकों में फ्रंटियर टेक्नोलॉजी को वास्तविक दुनिया के प्रभाव के परीक्षण क्षेत्रों के रूप में कार्यान्वित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यशाला के दौरान एडीपी/एबीपी न्यूज़लेटर 'आकांक्षी टाइम्स' का विमोचन किया गया।

एफआईएच हॉकी महिला विश्व कप क्वालीफायर के लिए भारतीय टीम घोषित, सलीमा टेटे होंगी कप्तान

हैदराबाद, 01 मार्च।

हॉकी इंडिया ने हैदराबाद (तेलंगाना) में होने वाले एफआईएच हॉकी महिला विश्व कप 2026 क्वालीफायर के लिए 20 सदस्यीय भारतीय सीनियर महिला हॉकी टीम (भारत) की घोषणा कर दी है। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता 8 से 14 मार्च तक आयोजित की जाएगी। भारत 8 मार्च को उरुग्वे के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगा, इसके बाद 9 मार्च को स्कॉटलैंड और 11 मार्च को वेल्स से मुकाबला करेगा।

इस क्वालीफायर में मेजबान भारत के अलावा इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, कोरिया, इटली, उरुग्वे, वेल्स और ऑस्ट्रिया की टीमें भाग लेंगी। यहां से तीन टीमें एफआईएच हॉकी महिला विश्व कप 2026 (बेल्जियम और नीदरलैंड्स) के लिए क्वालीफाई करेंगी, जो अगस्त 2026 में खेला जाएगा। टीमों को दो पूल में बांटा गया है। पूल–ए में इंग्लैंड, कोरिया, इटली और ऑस्ट्रिया, जबकि पूल–बी में भारत, स्कॉटलैंड, उरुग्वे और वेल्स शामिल हैं।

अनुभवी मिडफील्डर सलीमा टेटे टीम की कप्तानी संभालेंगी। गोलकीपिंग की जिम्मेदारी बंसारी सोलंकी और बिचु देवी खरीबाम को सौंपी गई है। डिफेंस में सुशीला चानू पुखरामबम, निक्की प्रधान, मनीषा चौहान, उदिता और इशिका चौधरी शामिल हैं। मिडफील्ड में सलीमा टेटे के साथ नेहा, सुनेलिता टोप्पो, साक्षी राणा, वैष्णवी विट्ठल फाल्के, रुताजा दादासो पिसाल और दीपिका सोरेंग को जगह मिली है।

फॉरवर्ड लाइन में नवनीत कौर, इशिका, लालरेमसियामी, ब्यूटी डुंगडुंग, बलजीत कौर और अन्नू गोल करने की जिम्मेदारी निभाएंगी। मुख्य कोच सजोर्ड मारिजन ने कहा कि टीम फिटनेस और रणनीति पर काम कर रही है और टूर्नामेंट से पहले दो अभ्यास मैच खेलेगी।

20 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम

गोलकीपर : बंसारी सोलंकी और बिचु देवी खरीबाम।

डिफेंडर्स : सुशीला चानू पुखरामबम, निक्की प्रधान, मनीषा चौहान, उदिता और इशिका चौधरी।

मिडफील्डर : सलीमा टेटे (कप्तान), नेहा, सुनेलिता टोप्पो, साक्षी राणा, वैष्णवी विट्ठल फाल्के, रुताजा दादासो पिसाल और दीपिका सोरेंग।

फॉरवर्ड : नवनीत कौर, इशिका, लालरेमसियामी, ब्यूटी डुंगडुंग, बलजीत कौर और अन्नू।

भारत में फंसे विदेशी नागरिकों के लिए सरकार ने जारी किया परामर्श

नई दिल्ली, 01 मार्च।

मध्य पूर्व एशिया में अमेरिका–इजराइल द्वारा ईरान पर हमलों और ईरान के जवाबी पलटवार के बाद उत्पन्न गंभीर स्थिति के बीच भारत सरकार ने देश में फंसे विदेशी नागरिकों के लिए परामर्श जारी किया है।

विदेश मंत्रालय ने परामर्श में कहा गया है कि है कि इस घटनाक्रम के कारण जिन विदेशी नागरिकों की भारत से प्रस्थान योजना प्रभावित हुई है और उन्हें अपनी यात्रा स्थगित करनी पड़ी है, वे अपनी वीजा अवधि बढ़ाने अथवा ठहराव को नियमित कराने के लिए निकटतम विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय से तत्काल संपर्क करें।

मंत्रालय ने कहा कि संबंधित विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय प्रभावित नागरिकों को आवश्यक औपचारिकताओं के निर्वहन में पूर्ण सहायता प्रदान करेगा, ताकि उनकी उपस्थिति विधिसम्मत बनी रहे। उल्लेखनीय है कि क्षेत्रीय तनाव के कारण कई अंतरराष्ट्रीय विमान सेवाओं ने उड़ानें निलंबित कर दी हैं। कुछ क्षेत्रों में हवाई क्षेत्र बंद होने से भारत में ठहरे विदेशी नागरिकों की वापसी प्रभावित हुई है।

काशी नगरी ने रचा विश्व कीर्तिमान, रामनगर में 'शहरी वन' के लिए पौधरोपण कर चीन को पीछे छोड़ा

वाराणसी, 01 मार्च।

उत्तर प्रदेश की धार्मिक नगरी वाराणसी (काशी) में पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में रविवार को एक वैश्विक कीर्तिमान रचा गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के गोद लिए गांव डोमरी सुजाबाद में लगभग 350 बीघा क्षेत्र में विकसित किए जा रहे आधुनिक 'शहरी वन' में महज एक घंटे में 2,50,000 से अधिक पौधे लगाकर धर्मनगरी ने चीन का वृक्षारोपण रिकॉर्ड तोड़ दिया। इस दौरान रिकॉर्ड के मौके पर 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' की टीम भी मौके पर मौजूद रही।

नगर निगम के महापौर अशोक कुमार तिवारी व नगर आयुक्त हिमांशु नागपाल के नेतृत्व में इस ऐतिहासिक प्रोजेक्ट की शुरूआत सुबह 9:11 बजे हुई और इसे 10:11 पर पूरा कर लिया गया। वाराणसी नगर निगम के नेतृत्व में मियावाकी तकनीक से हुए पौधरोपण की गिनती अभी जारी है। इस ऐतिहासिक क्षण को अपने रिकॉर्ड में दर्ज करने के लिए 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' की टीम भी मौके पर मौजूद रही। खास बात यह है कि वर्ष 2018 में चीन में एक घंटे में 1,53,981 पौधों का रोपण कर विश्व रिकॉर्ड बनाया था।

इस 'शहरी वन' की सबसे अनूठी विशेषता इसकी बनावट है। पूरे वन क्षेत्र को 60 सेक्टरों में बांटा गया है। प्रत्येक सेक्टर का नाम काशी के प्रसिद्ध गंगा घाटों जैसे–दशाश्वमेध, ललिता घाट, नया घाट, केदार घाट, चौशट्टी घाट, मानमंदिर घाट और शीतला घाट के नाम पर रखा गया है। प्रत्येक सेक्टर में पांच हजार पौधे रोपे गए हैं। नगर आयुक्त के अनुसार इस 'शहरी वन' से गंगा किनारे एक हरा–भरा 'मिनी काशी' का स्वरूप नजर आएगा। डोमरी में विकसित हो रहा यह शहरी वन आने वाली पीढ़ियों के लिए ऑक्सीजन बैंक का काम करेगा। यह आध्यात्मिक शांति और आधुनिक अर्थशास्त्र का एक अनूठा उदाहरण है। यह परियोजना केवल हरियाली तक सीमित नहीं है, बल्कि नगर निगम के लिए आय का बड़ा स्रोत भी बनेगी। मध्य प्रदेश की एमबीके संस्था के साथ हुए समझौते के तहत तीसरे वर्ष से ही निगम को दो करोड़ रुपये की आय होने लगेगी, जो सातवें वर्ष तक सात करोड़ रुपये वार्षिक तक पहुच सकती है।

गूगल पे का यूपीआई पिन भूल गए हैं तो बिना डेबिट कार्ड ऐसे करें फटाफट रीसेट

नई दिल्ली, 01 मार्च।

गूगल पे देश के सबसे भरोसेमंद यूपीआई ऐप्स में से एक है जिनसे आप कभी भी और कहीं भी पेमेंट कर सकते हैं। लेकिन क्या कभी ऐसा हुआ है कि आपको अपना यूपीआई पिन याद नहीं हो या जरूरत पड़ने पर अपना डेबिट कार्ड भी कहीं रखकर भूल गए हों, तो आप अकेले नहीं हैं। पहले गूगल पे में डेबिट कार्ड की डिटेल एंटर किए बिना यूपीआई पिन रीसेट करना संभव नहीं था। लेकिन अब ऐसा नहीं है। गूगल पे अब यूजर्स को डेबिट कार्ड के बिना, आधार–बेस्ड वेरिफिकेशन के जरिए यूपीआई पिन रीसेट करने की सुविधा देता है।

यह तरीका तब बेहद काम आता है जब आपका कार्ड खो गया हो या उस समय आपके पास न हो। बस आपका बैंक आधार वेरिफिकेशन को सपोर्ट करता हो और आपका आधार आपके मौजूदा मोबाइल नंबर से लिंक हो, तब आप बस कुछ ही टैप में अपना पिन रीसेट कर सकते हैं।

गूगल पे में यूपीआई पिन रीसेट करने से पहले ध्यान रखें कि अभी सभी बैंकों ने यह सुविधा शुरू नहीं की है, इसलिए आपका पिन बदले का एक्सपीरियंस आपके बैंक पर निर्भर करेगा। लेकिन अगर आपका बैंक इसे सपोर्ट करता है, तो पूरी प्रक्रिया तेज, आसान और पूरी तरह डिजिटल है यानी न डेबिट कार्ड की जरूरत और न ही बैंक ब्रांच जाने की।

–सबसे पहले अपने फोन पर गूगल पे ऐप खोलें और सुनिश्चित करें कि आप ऐप में लॉइन हों

–अब आपको होम स्क्रीन पर दाहिने–बांये कोने पर अपनी प्रोफाइल पिक्चर दिखेगी, इस पर टैप करें और फिर Bank अकाउंट ऑप्शन सिलेक्ट

–इसके बाद, उस बैंक अकाउंट को चुनें जिसका UPI PIN रीसेट करें

–अकाउंट डिटेल्स पेज पर आपको रीसेट प्रक्रिया शुरू करने के लिए Forgot UPI PIN पर टैप करना होगा

–इसके बाद, यदि आपका बैंक इस सुविधा को सपोर्ट करता है और आपने अपना खाता शुरुआत में आधार के जरिए जोड़ा था, तो आप आधार बेस्ड तरीके का चयन कर सकते हैं।

–अब आपको अपने आधार नंबर के पहले छह अंक एंटर करने होंगे और फिर ऑन–स्क्रीन प्रॉम्प्ट्स को फॉलो करें

–इसके बाद आपको अपने आधार–लिंक्ड मोबाइल नंबर पर एक OTP मिलेगा, पहचान वेरिफाई करने के लिए इसे एंटर करें

–अब आप नया UPI PIN क्रिएट करें, कन्फर्म करें और फिर रीसेट प्रक्रिया पूरी करें

गौर करने वाली बात है कि यह प्रक्रिया तभी काम करेगी अगर आपने गूगल पे में अपना बैंक अकाउंट आधार वेरिफिकेशन के जरिए जोड़ा हो। आपका आधार नंबर भी उसी मोबाइल नंबर से लिंक होना चाहिए, जो आपके बैंक के साथ रजिस्टर्ड हो। अगर ऐसा नहीं है तो आपके पास OTP नहीं आएगा।

अगर आपने कई बार गलत UPI PIN एंटर किया है तो आपका गूगल अकाउंट 24 घंटे तक के लिए ब्लॉक हो सकता है। और फिर आपको दोबारा कोशिश करने के लिए लॉकआउट पीरियड खत्म होने तक इंतजार करना होगा।

इजरायल के साथ ही इन देशों में रह रहे नागरिकों के लिए भारतीय दूतावास ने जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली, 01 मार्च।

इजरायल–यूएस के तेहरान पर किए गए हमले के जवाब में ईरान ने 'एपिक फ्यूरी' ऑपरेशन शुरू किया है। न्यूज एजेंसी फार्स ने दावा किया है कि इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने कुवैत, कतर, यूएई में स्थित यूएस बेस को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। वर्तमान हालात को देखते हुए भारतीय दूतावास ने एडवाइजरी जारी कर अपने नागरिकों को सतर्क और सावधान रहने की सलाह दी है।

कतर, तेल अवीव दूतावास और फिलिस्तीन में मौजूद प्रतिनिधि कार्यालय की ओर से जरूरी दिशानिर्देश के साथ ही कुछ इमरजेंसी नंबर भी जारी किए गए हैं। अपील की गई है कि लोग सुरक्षित जगहों पर रहें, स्थानीय खबरों पर नजर बनाए रखें और भारतीय दूतावास के संपर्क में रहें।

भारतीय नागरिकों को सलाह दी गई है कि वे पूरा ध्यान रखें और दूतावास और स्थानीय प्रशासन के निर्देशों का पालन करें ।

दूतावास ने अलग–अलग देशों के लिए अलग–अलग हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं और कहा है कि ये सभी 24 घंटे मदद के लिए तैयार रहेंगे। कतर में रह रहे भारतीयों के लिए 00974–55647502 नंबर जारी किया है और ईमेल आईडी सीओएनएसडॉटदोहाएटएमईएडॉटजीओवीडॉटइन पर संपर्क साधने को कहा है।

फिलिस्तीन में रह रहे सभी भारतीय नागरिकों से अनुरोध है कि वे सतर्क रहें और स्थानीय स्तर पर सुझाए गए सुरक्षा उपायों का पालन करें। इमरजेंसी में +970592916418 या आरईपीऑफिसएटएमईएडॉटजीओवीडॉटइन/सीओएनएसडॉटरामल्लाएटएमईएडॉटजीओवीडॉटइन पर संपर्क करें।

वहीं, इजरायल की राजधानी तेल अवीव के लिए पहले ही एडवाइजरी जारी कर सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की अपील की गई थी। इसके अनुसार, "किसी भी इमरजेंसी में, भारतीय नागरिक 24/7 हेल्पलाइन +972–54–7520711 के जरिए तेल अवीव में भारतीय दूतावास से संपर्क कर सकते हैं। ईमेल आईडी–सीओएनएस1डॉटतेलअवीवएटएमईएडॉटजीओवीडॉटइन है। दूतावास संबंधित अधिकारियों के साथ लगातार जुड़ा हुआ है और जरूरत पड़ने पर अपडेट जारी करता रहेगा।"

इससे पहले तेहरान में रह रहे भारतीयों को भी दूतावास के संपर्क में रहने और सुरक्षा उपायों का सावधानी से प्रयोग करने की हिदायत दी गई थी।

यूएई में भी भारतीय नागरिकों के लिए टोलफ्री नंबर 800–46342 और वॉट्सएप नंबर +971543090571 जारी किया गया है। इसके साथ ही ईमेल पता है–पीबीएसकेडॉटदुबईएटएमईएडॉटजीओवीडॉटइन और सीएडॉटअबूधाबीएटएमईएडॉटजीओवीडॉटइन।

गौरतलब हो, यह एडवाइजरी शनिवार को तेहरान पर हुए इजरायल–यूएस के संयुक्त ऑपरेशन के बाद जारी की गई। इसे प्रिवेंटिव यानी एहतियात के तौर पर "बचाव के लिए" मिसाइल हमले बताया गया।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस घटनाक्रम से इलाके में तनाव तेजी से बढ़ा है। ये हमले अमेरिका और ईरान के बीच एक संभावित न्यूक्लियर समझौते को लेकर बढ़ते तनाव के बीच हुए, जिससे मिडिल ईस्ट में बड़े पैमाने पर मिलिट्री टकराव की आशंका बढ़ गई है।

विशाखापत्तनमः 'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल' के 63वें संस्करण में 800 से अधिक प्रतिभागी शामिल

नई दिल्ली, 01 मार्च।

विशाखापत्तनम के आर.के. बीच पर आज सुबह फिट इंडिया संडेज़ ऑन साइकिल के 63वें संस्करण में 800 से अधिक साइकिल चालकों और फिटनेस प्रेमियों ने भाग लिया। इसके साथ ही भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा आयोजित तीन दिन के फिट इंडिया कार्निवल का शुभारंभ भी हुआ। इस अवसर पर ओलंपियन और एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता जिंसन जॉनसन ने कहा कि भारत इस वर्ष के एशियाई खेलों सहित प्रमुख आयोजनों के लिए तैयारी कर रहा है।

फिट इंडिया संडेज़ ऑन साइकिल का शुभारंभ दिसंबर 2024 में खेल मंत्री मनसुख मांडविया द्वारा किया गया था, जिसके बाद से इसका आयोजन युवा मामले और खेल मंत्रालय तथा भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा स्थानीय भागीदारों के सहयोग से देशभर के विभिन्न शहरों में किया जाता है।

मोबाइल वर्ल्ड कांग्रेस बार्सिलोना में, भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे केंद्रीय संचार मंत्री

नई दिल्ली, 01 मार्च।

केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया 2 से 5 मार्च तक स्पेन के बार्सिलोना में होने वाले मोबाइल वर्ल्ड कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

संचार मंत्रालय ने बताया कि बार्सिलोना पहुंचकर सिंधिया सम्मेलन में भारत मंडप का उद्घाटन करेंगे। इसके माध्यम से भारत की दूरसंचार विनिर्माण क्षमता और नवाचार पारितंत्र को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित किया जाएगा। वह इंडिया मोबाइल कांग्रेस के कर्टेन रेजर का भी अनावरण करेंगे। इस दौरान ज्योतिरादित्य सिंधिया जीएसएमए मंत्रिस्तरीय कार्यक्रम में 'बिल्ट फॉर व्हाट्स नेक्स्ट' सत्र को संबोधित करेंगे। इस सत्र में भविष्य की डिजिटल अवसंरचना और उभरती प्रौद्योगिकी ढांचे पर चर्चा होगी। वह 'ब्रेकिंग द कॉस्ट बैरियर' विषय पर समापन मुख्य वक्तव्य भी देंगे। इसमें सस्ती, समावेशी और विस्तार योग्य डिजिटल कनेक्टिविटी मॉडल पर जोर रहेगा।

दौरे के दौरान सिंधिया वैश्विक मुख्य कार्यपालक अधिकारियों के साथ रात्रिभोज में सहभागिता करेंगे। वह विभिन्न वैश्विक और भारतीय कंपनियों के स्टॉल का भ्रमण करेंगे। प्रौद्योगिकी प्रदर्शनियों का अवलोकन करेंगे। वह तेजस नेटवर्क्स के स्टॉल पर टी31600–डी3 हाइपर स्केलेबल डीसीआई प्लेटफार्म का शुभारंभ करेंगे। सिंधिया दूरसंचार क्षेत्र के विभिन्न हितधारकों के साथ उच्चस्तरीय द्विपक्षीय बैठकें भी करेंगे। इन बैठकों में सार्वभौमिक और सार्थक कनेक्टिविटी तथा सुदृढ़ संचार अवसंरचना पर सहयोग के अवसर तलाशे जाएंगे।

3 मार्च को लगने जा रहा है साल का पहला चंद्रग्रहण, भारत के अधिकांश स्थानों पर दिखाई देगा

नई दिल्ली, 01 मार्च।

आसमान में एक खूबसूरत खगोलीय घटना होने वाली है। 3 मार्च को साल का पहला चंद्रग्रहण देखने को मिलेगा। उत्तर–पूर्व भारत और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के कुछ स्थानों को छोड़कर भारत के अधिकांश स्थानों पर चंद्रोदय के समय चंद्र ग्रहण दिखाई देगा। सामान्य तौर पर, ग्रहण भारतीय समयानुसार शाम 3:20 मिनट पर शुरू होगा और ग्रहण का समाप्ति समय शाम 6:48 मिनट है।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अनुसार, इस ग्रहण की समग्रता भारतीय समयानुसार शाम 4:34 मिनट पर शुरू होगी और इस ग्रहण की समग्रता का समाप्ति समय शाम 5: 33 मिनट है। ग्रहण की तीव्रता 1.155 है। वहीं, भारत में दिखाई देने वाला अगला चंद्र ग्रहण 6 जुलाई, 2028 को दिखाई देगा और यह आंशिक चंद्र ग्रहण है। इससे पहले, भारत में दिखाई देने वाला अंतिम चंद्र ग्रहण 07–08 सितंबर, 2025

को दिखाई दिया था और यह पूर्ण चंद्र ग्रहण था।

चंद्र ग्रहण पूर्णिमा के दिन होता है जब पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच आ जाती है और जब तीनों पिंड एक सीध में होती हैं। पूर्ण चंद्र ग्रहण तब होगा जब पूरा चंद्रमा पृथ्वी की छाया में आ जाएगा और आंशिक चंद्र ग्रहण तभी होगा जब चंद्रमा का एक हिस्सा पृथ्वी की छाया में आ जाएगा।

जहरीली हवा से बढ़ रहा है अल्जाइमर का खतरा, पौने तीन करोड़ लोगों पर हुई रिसर्च में बड़ा खुलासा

नई दिल्ली, 01 मार्च।

बुढ़ापे में याददाश्त का कमजोर होना एक आम समस्या मानी जाती है। अब तक वैज्ञानिक भी इसके पीछे के ठोस कारणों का पता नहीं लगा पाए हैं, लेकिन एक हालिया अध्ययन ने एक बड़े खतरे की ओर इशारा किया है और वह है हमारे आस–पास मौजूद प्रदूषित हवा। जी हां, नई रिसर्च के मुताबिक, खराब हवा में सांस लेने से इस गंभीर बीमारी का जोखिम काफी बढ़ जाता है।

अमेरिका की 'एमोरी यूनिवर्सिटी' के शोधकर्ताओं ने इस विषय पर एक बहुत बड़ा अध्ययन किया है। यह रिसर्च अमेरिका के लगभग पौने तीन करोड़ लोगों के डेटा पर की गई है। इसके चौंकाने वाले नतीजे 'पीएलओएस मेडिसिन' नाम के मशहूर मेडिकल जर्नल में प्रकाशित हुए हैं। इस अध्ययन के लिए साल 2000 से लेकर 2018 के बीच के उन लोगों के डेटा का विश्लेषण किया गया, जिनकी उम्र 65 वर्ष या उससे अधिक थी।

अध्ययन में यह बात साफ तौर पर सामने आई है कि हवा में मौजूद खतरनाक प्रदूषक कण, जिन्हें 'च्ड 2.5' कहा जाता है, अल्जाइमर का खतरा बढ़ा देते हैं। लंबे समय तक प्रदूषित हवा में रहने का सबसे ज्यादा और सीधा असर हमारे दिमाग की सेहत पर पड़ता है। यह प्रदूषण हाई ब्लड प्रेशर, स्ट्रोक और डिप्रेशन का जोखिम भी बढ़ाता है, जो अल्जाइमर से जुड़ी बीमारियां हैं। हालांकि, शोधकर्ताओं ने स्पष्ट किया कि प्रदूषण इन बीमारियों के जरिए नहीं,

बल्कि सीधे तौर पर दिमाग पर वार करके अल्जाइमर का खतरा ज्यादा बढ़ाता है।

हवा का यह जहर वैसे तो हर किसी के लिए नुकसानदेह है, लेकिन कुछ लोगों के लिए यह और भी ज्यादा खतरनाक साबित हो सकता हैः

स्ट्रोक के मरीजः जिन लोगों को पहले कभी स्ट्रोक आ चुका है, उन पर वायु प्रदूषण का सबसे बुरा असर होता है। हाई बीपी के मरीजः हाई ब्लड प्रेशर जैसी पुरानी बीमारियों से जूझ रहे लोग भी इस जहरीली हवा के प्रति बेहद संवेदनशील होते हैं।

एमोरी यूनिवर्सिटी की रिसर्च टीम का मानना है कि 'डिमेंशिया' जैसी गंभीर बीमारी से बचने के लिए हवा की गुणवत्ता में सुधार करना बेहद जरूरी है। साफ हवा ही हमारे दिमाग को भविष्य के खतरों से सुरक्षित रखने की एक अहम चाबी हो सकती है।